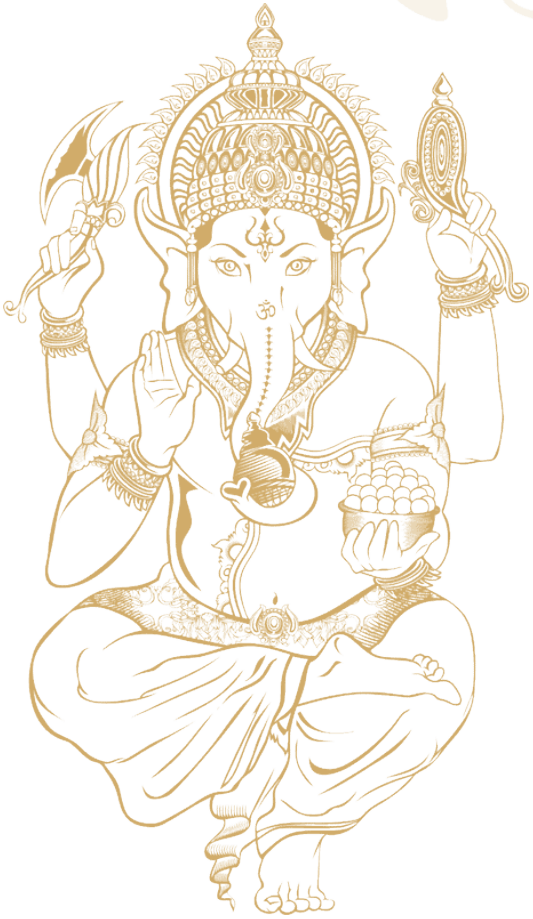

Miss Vamika

10 Jun 2021

08:05 PM

Kurukshetra

Model: Baby-Horoscope **Order No: 119839901**

तिथि 10/06/2021 **समय** 20:05:00 **वार** गुरुवार **स्थान** Kurukshetra **चित्रपक्षीय अयनांश** : 24:09:07
अक्षांश 29:59:00 उत्तर **रेखांश** 76:51:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** -00:22:36 घंटे

पंचांग

साम्पातिक काल	12:59:05 घं
वेलान्तर	00:00:32 घं
सूर्योदय	05:21:08 घं
सूर्यास्त	19:23:06 घं
चैत्रादि संवत	2078
शक संवत	1943
मास	ज्येष्ठ
पक्ष	कृष्ण
तिथि	1
नक्षत्र	मृगशिरा
योग	शूल
करण	किंस्तुघ्न

अवकहड़ा चक्र

गण	देव
योनि	सर्प
नाड़ी	मध्य
वर्ण	वैश्य
वश्य	चतुष्पाद
वर्ग	मृग
युँजा	पूर्व
हंसक	भूमि
जन्म नामाक्षर	वो-वोहिनी
पाया(रा.-न.)	स्वर्ण-स्वर्ण
होरा	गुरु
चौघड़िया	अमृत

विंशोत्तरी

मंगल 4वर्ष 9मा 27दि

मंगल

10/06/2021
08/04/2026

	00/00/0000
	10/06/2021
गुरु	29/08/2021
शनि	07/10/2022
बुध	05/10/2023
केतु	02/03/2024
शुक्र	02/05/2025
सूर्य	07/09/2025
चन्द्र	08/04/2026

योगिनी

संकटा 5वर्ष 6मा 5दि

संकटा

10/06/2021
16/12/2026

	00/00/0000
	00/00/0000
	10/06/2021
धान्या	25/01/2022
भ्रामरी	16/12/2022
भद्रिका	25/01/2024
उल्का	26/05/2025
सिद्धा	16/12/2026

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			06:06:27	धनु	मूल	2	केतु	राहु	---	0:00			
सूर्य			25:46:51	वृष	मृगशिरा	1	मंगल	राहु	शत्रु राशि	1.60	भ्रातृ	पितृ	जन्म
चंद्र			27:28:31	वृष	मृगशिरा	2	मंगल	गुरु	मूलत्रिकोण	1.48	आत्मा	मातृ	जन्म
मंगल			05:15:30	कर्क	पुष्य	1	शनि	शनि	नीच राशि	1.32	कलत्र	भ्रातृ	क्षेम
बुध	व	अ	26:27:10	वृष	मृगशिरा	1	मंगल	गुरु	मित्र राशि	1.02	अमात्य	ज्ञाति	जन्म
गुरु			07:52:18	कुंभ	शतभिषा	1	राहु	राहु	सम राशि	1.33	ज्ञाति	धन	सम्पत
शुक्र			15:40:49	मिथु	आर्द्रा	3	राहु	शुक्र	मित्र राशि	1.13	पुत्र	कलत्र	सम्पत
शनि	व		19:06:02	मक	श्रवण	3	चंद्र	बुध	स्वराशि	1.15	मातृ	आयु	अतिमित्र
राहु	व		16:37:38	वृष	रोहिणी	2	चंद्र	शनि	मित्र राशि		---	ज्ञान	अतिमित्र
केतु	व		16:37:38	वृश्चि	अनुराधा	4	शनि	गुरु	मित्र राशि		---	मोक्ष	क्षेम

लग्न-चलित

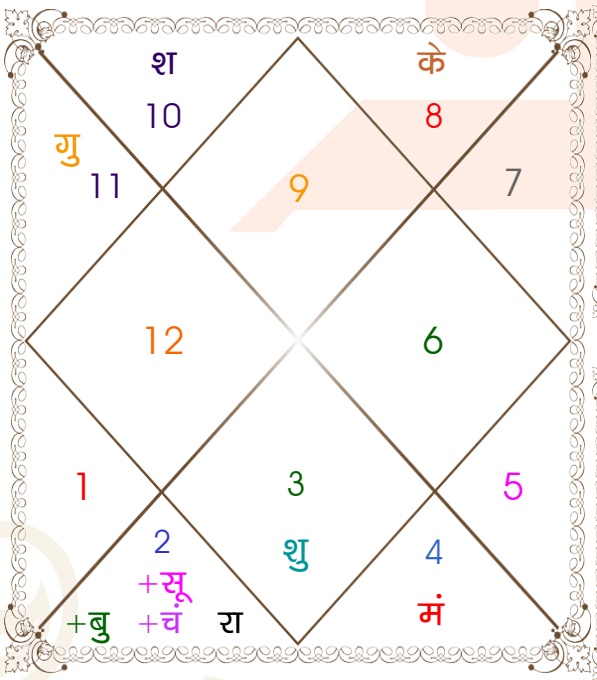

चन्द्र कुंडली

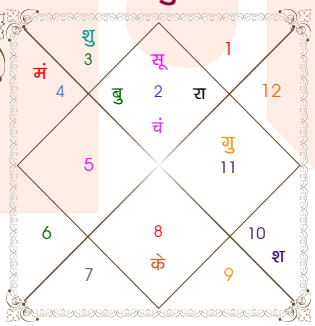

नवमांश कुंडली

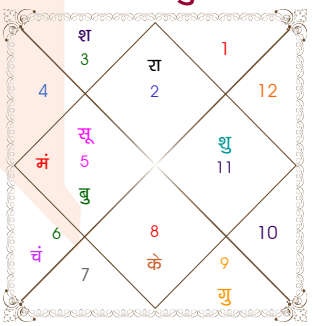

सर्वाष्टकवर्ग

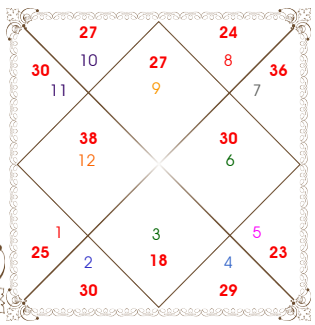

दशमांश कुंडली

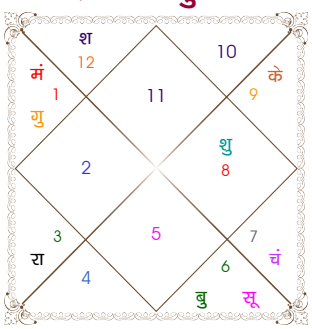

नक्षत्रफल

आप मृगशिरा नक्षत्र के द्वितीय चरण में पैदा हुई हैं। अतः आपकी जन्म राशि वृष तथा राशि स्वामी शुक्र होगा। नक्षत्रानुसार आपकी सर्प योनि, वैश्य वर्ण, मूषक वर्ग, देवगण तथा मध्य नाडी होगी। नक्षत्र के चरणानुसार आपका जन्म नाम "वो" अक्षर से प्रारम्भ होगा।

चंचलता तथा चतुरता नैसर्गिक रूप से आप में विद्यमान रहेगी। आप जो भी कार्य करेंगी। चतुराई से उन्हे सम्पन्न करेंगी। आप धैर्यवान होंगी तथा किसी भी परिणाम का आप धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा या सामना कर सकती हैं। जीवन में यदा कदा आप में अभिमान का भाव भी उत्पन्न होगा जिससे आप अन्य जनों की उपेक्षा कर सकती हैं।

चतुरश्चपलो धीरः कूरकर्मा क्षुधातुरः।
अहंकारी परद्वेषी मृगशीर्णि भवेन्नरः।।
जातकदीपिका

अर्थात् मृगशिरा नक्षत्र में उत्पन्न जातक चतुर चंचल धैर्यवान, कूरकर्म करने वाला, भूख से व्याकुल, अहंकारी तथा अन्य जनों से द्वेष करने वाला होता है।

आप किसी वस्तु का नकल या प्रतिलिपि तैयार करने में अत्यन्त ही निपुण होंगी तथा अपने समस्त सांसारिक कार्यों को अपनी बुद्धि तथा परिश्रम से सफल करने में तत्पर रहेंगी। कभी कभी आप कठोर कार्य करने के लिए भी उद्यत होंगी।

चपलश्चतुरो धीरः कूटकर्मस्वकर्मकृत।
अहंकारी परद्वेषी मृगे भवति मानवः।।
मानसागर

अर्थात् मृगशिरा नक्षत्र का जातक चंचल, चतुर, धैर्यवान, नकली वस्तु बनाने वाला, स्वार्थी, अहंकारी और द्वेषी होता है।

स्वभाव से ही भय आपके मन में व्याप्त रहेगा तथा आप भयभीत रहेंगी। आप एक कुशल तथा विदुषी महिला भी हो सकती हैं। उत्साह से आप हमेशा युक्त रहेंगी एवं धन तथा ऐश्वर्य संबंधी सुख आपको पूर्ण मात्रा में प्राप्त होते रहेंगे।

चपलश्चतुरोभीरुः पटुरुत्साही धनी मृगे भोगी।
बृहज्जातकम्

अर्थात मृगशिरा नक्षत्रोत्पन्न व्यक्ति चंचल, चतुर, डरपोक, विद्वान, उत्साही धन, वैभव तथा ऐश्वर्य को भोगने वाला होता है।

आप शस्त्र विद्या के विषय की अच्छी ज्ञाता होंगी। विनयशीलता आपके स्वभाव का एक अंग होगा तथा सबसे आप नम्रतापूर्ण व्यवहार करेंगी। आपके मन में गुणों तथा

गुणवानों के प्रति उचित आदर का भाव विद्यमान रहेगा तथा गुणवानों के प्रति आप विशेष रूप से अनुरक्त रहेंगी। आप विलासी प्रवृति वाली होंगी तथा सम्पूर्ण भौतिक सुख संसाधनों से आप परिपूर्ण रहेंगी। उच्चाधिकारी वर्ग से आपको पूर्ण आदर तथा सहयोग मिलेगा तथा आप इनकी प्रिय रहेंगी। आजीवन सत्य मार्ग पर चलने के लिए आप नित्य यत्नशील रहेंगी।

शरासनाभ्यासरतो विनीतः सदानुरक्तो गुणिनां गणेषु।
भोक्तानृपस्नेहभरेण पूर्णः सन्मार्गवृतो मृगजात जन्मा।
जातकाभरणम्

अर्थात मृगशिरा नक्षत्र का मानव अस्त्र शस्त्र विद्या में पारंगत, नम्र, गुणों का आदर करने वाला, विलासी राजा का प्रिय और सन्मार्गगामी होता है।

आप शान्त चित्त की महिला होंगी तथा इधर उधर घूमना या यात्रा करना आपको अच्छा लगेगा। अतः आपका अधिकांश समय भ्रमण एवं यात्रा आदि में ही व्यतीत होगा।

चान्द्रे सौम्यमनोळटनः कुटिलदृक् कामातुरो रोगवान।
जातकपरिजातः

अर्थात मृगशिरा में उत्पन्न जातक सौम्यचित्त वाला घूमने फिरने या यात्रा करने वाला, कुटिल दृष्टि युक्त, कामपीड़ित तथा रोगी होता है।

आपका जन्म स्वर्ण पाद में हुआ है। यद्यपि स्वर्ण पाद में उत्पन्न होने से जातक को कई प्रकार से दुःख एवं कष्ट प्राप्त होते है। उसका शारीरिक स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता तथा धनाभाव हमेशा रहता है। साथ ही जातक जीवन में सुखसंसाधनों से भी हीन रहता है। सांसारिक कार्यों में उसे अल्प मात्रा में ही सफलता प्राप्त होती है। इसके अतिरिक्त जीवन के हर क्षेत्र में अत्यधिक परिश्रम के द्वारा उसे अल्प सफलता प्राप्त होती है। चूंकि आपका चन्द्रमा जन्म कुण्डली में अपनी शुभ राशि में स्थित है। अतः आपके लिए यह अशुभ नहीं रहेगा। अपितु अधिकांश शुभ ही रहेगा। आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा शत्रु भी अल्प मात्रा में ही रहेंगे वे सभी आपसे पराजित तथा प्रभावित रहेंगे। कभी कभी आप स्वाभाविक रूप से क्रोध या उग्रता का भी प्रदर्शन करेंगी। आप सुन्दर एवं आकर्षक महिला होंगी तथा शरीर में लावण्यता पूर्ण रूपेण विद्य मान रहेगी। जीवन में विविध प्रकार के सुखसंसाधनों को अर्जित करने में आप सफल रहेंगी तथा प्रसन्नतापूर्वक इनका उपभोग करेंगी। इसके अतिरिक्त कभी कभी आप अल्प मात्रा में शारीरिक रूप से कष्टानुभूति भी प्राप्त करेंगी।

आप वृष राशि में उत्पन्न हुई हैं। अतः आपका वर्ण लालिमा युक्त गौरवर्ण तथा आखें एवं गाल स्थूलाकृति की होंगी। आलस्य भी आपके स्वभाव में रहेगा। उत्तम कुल में उत्पन्न लोगों के प्रति आपकी सेवा तथा श्रद्धा की भावना रहेगी साथ ही गुरू तथा ब्राहमणों की आप अत्यन्त आज्ञाकारिणी होंगी तथा उनकी आज्ञा पालन करना अपना प्रिय कर्तव्य समझेंगी। आपकी प्रवृति में वात तथा कफ का मिश्रण रहेगा। आप बुद्धिमती होंगी तथा सामान्य रूप से जीवन को सुख से व्यतीत करेंगी। आपके बाल घुंघराले होंगे तथा दानशीलता का भाव भी आपके

मन में व्याप्त रहेगा।

पृथुकगलकशोणः स्थूलनेत्रः प्रमादी।
कुलजनपरिसेवी प्रायशः सौख्य मेधी।।
द्विजगुरूजनभक्तः श्लेष्मवातस्वभावः।।
सितकुटिलचाग्रो दानशीलो वृषेजः।।
जातकदीपिका

आप आजीवन समस्त भौतिक सुख साधनों से समृद्ध रहेंगी किसी भी चीज का अभाव नहीं रहेगा। आपकी प्रवृति में दानशीलता का गुण रहेगा। आप शुद्धता या सफाई पसन्द होंगी तथा इसके लिए हमेशा यत्नशील रहेंगी। समस्त कार्यकलापों को आप कुशलता पूर्वक सम्पन्न करेंगी। आपके शरीर में बल का अभाव नहीं रहेगा। आप धनार्जन प्रचुर मात्रा में करेंगी फलस्वरूप आपकी प्रवृति विलासी होगी इसके लिए आप उन्मुक्त भाव से व्यय करेंगी। आपका आचरण श्रेष्ठ रहेगा तथा तेजस्विता भी आपके अन्दर विद्यमान रहेगी। आपकी मित्रता भी अच्छे लोगों से सम्पन्न होंगी।

भोगीदाताशुचिर्दक्षो महासत्वो महामतिः।
धनी विलासी तेजस्वी सुमित्रश्च वृषे भवेत।।
मानसागरी

आपका जानु एवं मुख का आकार थोड़ा दीर्घ होगा। आपके जीवन के प्रारम्भ के दो भाग दुःखपूर्वक तथा अन्तिम दो भाग सुखपूर्वक व्यतीत होंगे। पुरूषों के प्रति आप आवश्यकता से अधिक आकर्षित रहेंगी। आपके अर्न्तमन में क्षमाशीलता तथा त्याग की भावना हमेशा निहित रहेगी तथा यथा समय इन भावनाओं का भी प्रदर्शन करेंगी। प्रारम्भिकावस्था में आप कष्ट को सहन करेंगी तथा परिश्रम भी अधिक मात्रा में करना पड़ेगा। आपके मुख, पीठ तथा बगल में तिल, मस्सा, लहसन या व्रणादि के चिन्ह हो सकते हैं।

पृथूरूवक्त्रः कृषिकर्मकृत्स्यात्।
मध्यान्ते सौख्यः प्रमदाप्रियश्च।।
त्यागी क्षमी क्लेशसहश्च गोमान।
पृष्ठास्यपार्श्वेङ्कयुतो वृषोत्थः।।
फलदीपिका

आपकी पुत्रों की अपेक्षा कन्या सन्ततियों की अधिकता रहेगी। आपका आचरण श्रेष्ठ रहेगा तथा व्यवहार नम्र रहेगा। इस प्रकार सर्वप्रकार से विभिन्न प्रकार के सुखों का उपभोग करती हुई कीर्ति से युक्त रहेंगी।

दाताकान्त यशोधनोरूचरणः कन्या प्रजो गोपतौ।
जातकपरिजातः

आप विशाल तथा विस्तृत वक्षस्थल से युक्त होंगी तथा आपके बाल घने तथा

घुंघराले होंगे। नैसर्गिक रूप से ही कामभावना के प्रति आपका आकर्षण अधिक रहेगा। आप गलत तथा सही में भेद करने में निपुण होंगी। आपकी चाल मोहक तथा चित्ताकर्षक होगी तथा शरीर के अंग दीर्घ स्थूल एवं सुडौल होंगे।

व्यूढारस्कोडतदाता धनकुटिलकचः कामुकः कीर्तिशाली
कान्तः कन्या प्रजावान वृषसमनयनो हंसलीला प्रचारः
मध्यान्ते भोग भागी पृथूकटिचरणस्कन्धे जान्वस्यजङ्घः
साकः पार्श्वास्यपृष्ठे ककुदशुभगति क्षान्तियुक्तौ गवीन्दौ।।
सारावली

आप धीरे धीरे चलना पसन्द करेंगी। कार्यों को आप बुद्धिमानी तथा चतुराई से सम्पन्न करेंगी। आपके अर्न्तमन में परोपकार की भावना भी निहित होगी जिससे आप यथा शक्ति अन्य जनो का सहयोग एवं सहायता करने के लिए हमेशा तत्पर रहेंगी। इस प्रकार अपने अच्छे कार्यों तथा पुण्यों के द्वारा सुखपूर्वक जीवन व्यतीत करेंगी।

स्थिरगति सुमति कमनीयतां कुशलता हि नृणामुपभोगताम्।
वृषगतो हिमगुर्भृशमादिशेत सुकृतिः कृतितश्च सुखानि च।।
जातकभरणम्

मुखमंडल आपका आकृति में दीर्घ होगा तथा आप अत्यन्त सुन्दर होंगी। जीवन के कष्टों को सहने में आप सक्षम रहेंगी तथा सविलास गमन प्रिय प्रकृति होगी। आप उच्चाधिकार प्राप्त महिला भी हो सकती हैं। आपके पेट में जठराग्नि की तीव्रता रहेगी तथा आप युवा एवं वृद्धावस्था में सुखी रहेगी। एतादिरिक्त आपका स्वभाव अच्छा होगा तथा आप भगवान विष्णु एवं शिव की आराधना करने वाली होंगी।

कान्तः खेलगतिः पृथूरुवदनः पृष्ठास्यपार्श्वाङ्कितः।
त्यागी क्लेश सहः प्रभु ककुदवान कन्याप्रजः श्लेष्मलः।।
पूर्वैबन्धुद्यूनात्मजैर्विरहितः सौभाग्ययुक्तः क्षमी।
दीपाग्नि प्रमदाप्रियः स्थिर सुहृन्मध्यान्त सौख्यो गवि।।
बृहज्जातकम्

आप देव गण में उत्पन्न हुई हैं अतः मधुर एवं प्रिय वाणी बोलने वाली होंगी जिससे अन्यजन आपसे प्रभावित रहेंगे। आपकी बुद्धि भी सीधी एवं सरल होगी। अपने विचारों को सादगी से प्रकट करना तथा दूसरे की बातों को सादगी से ग्रहण करना आपकी मुख्य विशेषता होगी। आपको सात्विक तथा अल्प भोजन करना रूचिकर लगेगा। गुणों के विषय में आप विषद ज्ञान रखेंगी तथा महान लोगों द्वारा वर्णित गुणों से सर्वदा युक्त रहेंगी। आप के पास हमेशा धन वैभव तथा ऐश्वर्य की समृद्धि बनी रहेगी।

वृषभे सुशीलः देवेशदेवालयः धर्माधिकारी।
वृहत्पाराशर होराशास्त्र

आपका शरीर सुन्दर तथा स्वस्थ होगा। आपकी स्वभाव से ही दानी प्रवृति होगी तथा यथा शक्ति आप जरूरत मन्दों को दान देती रहेंगी जिससे समाज में आपकी प्रतिष्ठा बढ़ेगी। आप दिखावटीपन तथा ढोंग से बहुत दूर रहेंगी तथा सादगी पसन्द करेंगी। साथ ही आप एक उच्चकोटि की विदुषी भी हो सकती हैं।

सुस्वरः सरलोक्तमतिः स्यादल्पभोजन करो हि नरश्च।
जायते सुरगणे डणज्ञः सुज्ञवर्णितगुणो द्रविणाढ्यः।।
जातकाभरणम्

अर्थात देवगण का जातक अच्छी वाणी वाला, सरल बद्धि से युक्त, अल्प मात्रा में भोजन करने वाला, अन्य जनों के गुणों का ज्ञाता, महान विद्वानों द्वारा वर्णित गुणों से युक्त तथा वैभवशाली होता है।

आप का जन्म सर्पयोनि में हुआ है अतः कभी कभी आपको अधिक क्रोध आएगा जिससे अन्य जनों को कष्ट होगा। आपके समस्त कार्य चंचलता से ही सम्पन्न होंगे अतः सफलता अल्प में ही मिलेगी। इसके अतिरिक्त आप कई प्रकार के चटपटे स्वादों के खाने की भी शौकीन रहेंगी।

दीर्घरोषो महाक्रूरः कृतघ्नश्च भवेन्नरः।
चपलो रसना लोलः सर्प योनौ न संशयः।।
मानसागरी

अर्थात् सर्प योनि में उत्पन्न जातक महाक्रोधी, महाक्रूर, कृतघ्न, चंचल तथा जीभ का लोलुप होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति षष्ठभाव में स्थित है। अतः आप माता की प्रिय रहेंगी उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक रूप से वे दुर्बलता की अनुभूति करेंगी। धन सम्पत्ति से वे प्रायः युक्त रहेंगी तथा जीवन में आपको पूर्ण रूप से हर सम्भव सहयोग तथा सहायता प्रदान करती रहेंगी। इसके साथ ही आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में यदि कोई व्यवधान आएंगे तो उन्हें दूर करने में सर्वदा प्रयत्नशील रहेंगी तथा आपकी सफलता की सर्वदा इच्छुक होंगी।

आप भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा तथा सम्मान की भावना रखेंगी तथा हमेशा उनकी सेवा करने के लिए तत्पर रहेंगी परन्तु आपके मध्य कभी कभी मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे अप्रिय स्थितियां भी उत्पन्न होंगी लेकिन फिर भी सामान्य संबंध मधुर ही रहेंगे। साथ ही उनको जीवन में वांछित सहायता एवं सहयोग प्रदान करने की भी आप इच्छुक रहेंगी।

आपके जन्म समय में सूर्य षष्ठ भाव में स्थित है अतः पिता की आप प्रिय रहेंगी। उनका शारीरिक स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं आयु भी अच्छी रहेगी। फिर भी यदा कदा शारीरिक रूप से वे व्याकुलता की अनुभूति करेंगे। धनैश्वर्य से वे सर्वदा युक्त रहेंगे एवं जीवन में

आपको पूर्ण रूपेण अपना आर्थिक तथा अन्य रूप से सहयोग प्रदान करते रहेंगे जिससे आपको कोई कष्ट न हो। साथ ही शत्रुवर्ग से भी आप का नित्य बचाव करते रहेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान का भाव रहेगा एवं उनकी आज्ञा का पालन भी नित्य करती रहेंगी। आपके परस्पर संबंध मधुर होंगे। परन्तु यदा कदा आपसी मतभेद भी रहेंगे जिससे कभी कभी आपसी संबंधों में तनाव उत्पन्न होगा परन्तु अल्प समय में ही सब कुछ ठीक हो जाएगा। आप जीवन में अपनी ओर से उनका पूर्ण ध्यान रखेंगी एवं किसी भी प्रकार से वांछित सहयोग तथा सहायता प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगी।

आपके जन्म समय में मंगल अष्टम भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक रूप से वे अस्वस्थ रहेंगे। आप उनकी प्रिय रहेंगी तथा आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह एवं सम्मान का भाव विद्यमान रहेगा। जीवन में आप समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में उन से आर्थिक तथा अन्य रूप से सहयोग अर्जित करती रहेंगी। धन धान्य का उनके पास अभाव नहीं रहेगा अतः यदा कदा विशिष्ट धन की प्राप्ति आप उनसे कर सकेंगी।

आप भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह भाव रखेंगी एवं अवसरानुकूल सुख दुःख में उनको अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगी। आपके आपसी संबंध भी ठीक ही रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण इनमें तनाव तथा कटुता की स्थिति भी उत्पन्न होगी लेकिन कुछ समय बाद स्वतः ही सब कुछ ठीक हो जाएगा। साथ ही आप सुख दुःख में भी उनका सहयोग करने के लिए करने के लिए उद्यत रहेंगी।

आपके लिए कार्तिक मास, पंचमी, दशमी, पौर्णमासी तथा अमावस्या तिथियां, हस्त नक्षत्र, सुकर्मायोग, शनिवार, चतुर्थ प्रहर तथा धनु राशि में स्थित चन्द्रमा अशुभ फलदायी होंगे। अतः आप 15 नवम्बर से 14 दिसम्बर के मध्य तथा उपरोक्त योगो में कोई भी शुभ कार्य, व्यापार, नवगृहनिर्माण, क्यविक्य आदि कार्य प्रारम्भ न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही अधिक होगी। इसी समय पर शारीरिक सुरक्षा का भी उचित ध्यान रखा जाना चाहिए।

यदि आपके लिए समय अशुभ चल रहा हो मानसिक अशान्ति, शारीरिक कष्ट, व्यापार, नौकरी या प्रोन्नति में बाधा उत्पन्न हो रही हो तो ऐसे समय में आपको नियमित रूप से सन्तोषी माता के व्रत रखने चाहिए तथा श्वेत मोती, श्वेत वस्त्र चावल, शहद आदि पदार्थो का दान करना चाहिए। इसके साथ ही शुक्र के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 20 हजार जप किसी योग्य विद्वान से सम्पन्न करवाने चाहिए इससे आपके अशुभ फलों में न्यूनता आएगी तथा शुभ फलों में बृद्धि होगी।

ऊँ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः।
मंत्र- ऊँ ह्रीं श्रीं शुक्राय नमः।